याकूब की पत्री

अध्याय
दो

ज्ञान के दो मार्ग

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2015 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. चिन्तनशील ज्ञान 2

क. आवश्यकता 2

1. परीक्षाओं की चुनौतीयाँ 2

2. नाना प्रकार की परीक्षाएँ 3

ख. मार्गदर्शन 5

1. परखे जाने 5

2. धीरज 6

3. परिपक्वता 6

4. पुरस्कार 7

ग. विश्वास 8

III. व्यवहारिक ज्ञान 10

क. आवश्यकता 10

1. सांसारिक ज्ञान 12

2. स्वर्गीय ज्ञान 13

ख. मार्गदर्शन 14

1. परमेश्वर की व्यवस्था के मापदण्ड 14

2. परमेश्वर की व्यवस्था की प्राथमिकताएँ 16

ग. विश्वास 18

1. विश्वास और कर्म 18

2. विश्वास और धर्मी ठहराया जाना 19

IV. सारांश 21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

याकूब की पत्री

अध्याय एक

ज्ञान के दो मार्ग

परिचय

एक समय या किसी अन्य समय पर हम सभी ने ऐसी चुनौती भरी हुई परिस्थितियों का सामना किया है जो उलझन से भरी हुई और हतोत्साहित करने वाली रही हैं। और इन परिस्थितियों में, हमने अकसर यह चाहा है कि हम किसी ऐसे मित्र को पाएँ जो हमें समझ सकता है कि क्या कुछ चल रहा है और जो हमें कुछ व्यवहारिक परामर्श दे सकता हो। ऐसा व्यक्ति ज्ञान का स्रोत होना चाहिए जो हमारे लिए महान् आनन्द को ले आए।

कई तरीको से, ऐसा ही कुछ आरम्भिक विश्वासियों के साथ जिन्होंने नए नियम में याकूब की पत्री को सबसे पहले प्राप्त किया। उन्होंने ऐसी चुनौती भरी हुई परिस्थितियों का सामना किया जिन्होंने उन्हें उलझन में हताशा में डाल दिया था। और याकूब ने उन्हें अपनी पत्री ज्ञान देने के लिए लिखी। उसने उन्हें उनकी परिस्थितियों में परमेश्वर के *अच्छे* उद्देश्यों को स्मरण दिलाने के लिए लिखा। उसने उन्हें जानने दिया कि परमेश्वर विश्वनीय मार्गदर्शन को देने का प्रस्ताव देता है जिसका उन्हें अनुसरण करना चाहिए। और उसने उन्हें सुनिश्चित किया कि यदि वे परमेश्वर के ज्ञान को अपना लेंगे, तो वे महान् आनन्द का अनुभव करेंगे।

यह *याकूब की पत्री* के ऊपर हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, और इसका ध्यान याकूब के मुख्य एकीकृत विषयों में से एक के ऊपर केन्द्रित करना है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "ज्ञान के दो मार्ग" के नाम से दिया है, क्योंकि हम यह खोज करेंगे कि कैसे यह पुस्तक में आरम्भिक कलीसिया को परमेश्वर की ओर से दो प्रकार के ज्ञान का प्रस्ताव देती है। और, हम यह देखेंगे कि कैसे यह मसीह के आज के अनुयायिओं को वैसे ही मार्गदर्शन प्रदान करती है।

हमारे पिछले अध्याय में, हमने दोनों अर्थात् याकूब की पत्री सरंचना और विषयवस्तु की सूची देखा जो पहली सदी के जाने-पहचाने बुद्धि साहित्य को दर्शाती करती है। और हमने इस पत्री के मूल उद्देश्य को इस तरह से सारांशित किया:

> **याकूब ने उसके पाठकों को परमेश्वर की ओर से प्राप्त ज्ञान का अनुसरण करने के लिए बुलाहट दी ताकि उन्हें उनकी परीक्षाओं में आनन्द प्राप्त हो।**

याकूब अकसर शब्द "ज्ञान" - यूनानी भाषा में सोफ़िया (σοφία) – और "बुद्धि" – यूनानी भाषा में सोफ़ोस (σοφός) का उपयोग – अपनी पत्री के केवल दो अंशों में करता है। हम इन शब्दों को 1:2-18 में और एक बार फिर से 3:13-18 में पाते हैं। ये प्रसंग विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये प्रत्येक ज्ञान के दो में से एक मार्ग की ओर संकेत करते हैं जिसे याकूब उसके पाठकों को अनुसरण करने के लिए बुलाता है।

अब, हमें ध्यान देना चाहिए कि कुछ लोग याकूब की पत्री की पुस्तक में ज्ञान के विषय पर सोच विचार करते हैं, तो वे याकूब के द्वारी की गई सांसारिक ज्ञान और स्वर्गीय ज्ञान के मध्य की भिन्नता के बारे में सोचते हैं। हम इन दोनो तरहों के ज्ञान के बारे में इस अध्याय के अन्त में खोज करेंगे। परन्तु हमारे प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए, हम यहूदी बुद्धि साहित्य परम्परा में पाए जाने वाले प्रतिष्ठित ज्ञान के उन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

केवल दो मुख्य मार्गों के ऊपर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे। पहला वह है जिसे हम "चिन्तनशील ज्ञान" कह कर पुकार सकते हैं और दूसरे को हम "व्यवहारिक ज्ञान" कह कर पुकारेंगे।

चिन्तनशील ज्ञान अपने सबसे स्पष्ट रूप में अय्यूब और सभोपदेशक जैसी पुस्तकों में प्रस्तुत किया गया है। ये पुस्तकें परीक्षाओं और परेशानियों के पीछे परमेश्वर के प्रयोजनों की खोज करती हैं। दूसरी तरफ, व्यवहारिक ज्ञान बड़ी प्रमुखता से नीतिवचन की पुस्तक में प्रगट होता है। यह एक ऐसी पुस्तक है जो कि प्रतिदिन के जीवन के लिए परामर्श और मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित है।

जैसा कि हम खोज करेंगे कि याकूब की पत्री की पुस्तक में ज्ञान के ये दोनों मार्ग मिलते हैं, हम सर्वप्रथम चिन्तनशील ज्ञान के तरीके के ऊपर ध्यान देगें। और दूसरा, हम व्यवहारिक ज्ञान के तरीके को देखेंगे। आइए याकूब के द्वारा चिन्तनशील ज्ञान के ऊपर दिए हुए ध्यान के साथ आरम्भ करें।

चिन्तनशील ज्ञान

हम सभी ने ऐसी परिस्थितियों का सामना किया है जहाँ हम यह सोचते हैं कि हम समझ चुके हैं, परन्तु हम केवल यही पाते हैं कि हम गलत थे। हमें अकसर दिखाई देने वाले से परे होकर देखना चाहिए और एक सैंकठेण्ड लेकर, देखने के लिए अधिक सावधान होना चाहिए कि क्या कुछ चल रहा है। कई तरीकों में, कुछ इसी तरह से याकूब अपनी पुस्तक मुख्य हिस्से को आरम्भ करता है। वह अपने पाठकों को बुलाता है कि प्रगट होने वाली हताशा से भरी हुई परिस्थितियों से परे होकर देखें, और जो कुछ वास्तव में उनके जीवनों में घटित हो रहा है, उसके प्रति अन्तर्दृष्टि प्राप्त करें।

हम यह देखेंगे कि कैसे याकूब इस प्रकार के चिन्तनशील ज्ञान को तीन तरीकों से निष्पादित करता है। सर्वप्रथम, हम इसके पाठकों की आवश्यकता के ऊपर ध्यान देंगे। दूसरा, हम इस मार्गदर्शन को देखेंगे जिसे याकूब उन्हें प्रस्तावित करता है। और तीसरा, हम चिन्तनशील ज्ञान और विश्वास के मध्य के सम्पर्क के ऊपर ध्यान **देंगे**। आइए सर्वप्रथम हम याकूब के पाठकों की चिन्तनशील ज्ञान की आवश्यकता के ऊपर ध्यान दें।

आवश्यकता

हमारे पिछले अध्याय में, हमने सीखा कि इस पत्री के मूल पाठकों में मूल रूप से आरम्भिक यहूदी मसीही सम्मिलित। उनके लिए सबसे अधिक संभावना यह थी कि उन्हें स्तिफनुस की शहादत के पश्चात् यरूशलेम में आए सताव के बहाव के कारण वहाँ से निकल जाने के लिए मजबूर कर दिया गया था। और यह स्पष्ट है कि जो कुछ याकूब ने लिखा उसकी बहुतों को हताशा और उलझन में आवश्यता थी जब वे गंभीर परीक्षाओं का सामना कर रहे थे जिसके कारण वे तितर-बितर हो गए थे।

याकूब 1:2 में, हम देख सकते हैं कि याकूब इन आवश्कताओं के कारण व्यस्त था। अपने पत्र के आरम्भिक वचनों को लिखने के तुरन्त पश्चात् उसने लिखा कि:

> **हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो (याकूब 1:2)।**

याकूब के पाठकों की आवश्यकता को समझने के लिए, इस प्रसंग को दो आयामों से देखना अधिक सहायतापूर्ण होगा। सर्वप्रथम, हम परीक्षाओं से आने वाली चुनौतीयों की जाँच करेंगे। और दूसरा, हम उन कई प्रकार की परीक्षाओं की खोज करेंगे जिन्हें याकूब के पाठकों ने सामना किया। आइए परीक्षाओं की चुनौतीयों से आरम्भ करें।

परीक्षाओं की चुनौतीयाँ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

याकूब 1:2 अनुवादित शब्द परीक्षा यूनानी भाषा की संज्ञा *पेरीसामोस* (πειρασμός) का अनुवाद है। यह शब्द "परीक्षण," "परीक्षा," "जाँच" के रूप में अनुवादित हो सकता है। कुछ इसी तरह से, इसका क्रिया स्वरूप *पेरीजाओ* (πειράζω) का अनुवाद "कोशिश करने," "परीक्षा में जाने" और "जाँच किए जाने" में हो सकता है। इन संभावित अनुवादों की मात्राओं को समझना उन परिस्थितियों को आत्मसात् करने में हमारी सहायता कर सकता है जो कि इस पत्री के मूल पाठक सामना कर रहे थे। वास्तव में, उन्होंने कठिन *परीक्षाओं* का सामना किया था और ये परीक्षाएँ उनके ऊपर "परीक्षण" के ऐसे तरीके को ले आई थी जिसमें उनकी *जाँच* का प्रयोजन प्राप्त हो सके।

दुर्भाग्य से, आधुनिक मसीही विश्वासियों ने अकसर उस विशेषता के ऊपर कम ध्यान दिया है जो याकूब के मन में थी क्योंकि हम परीक्षाओं को, परखे जाने और जाँचों को पूरी तरह से भिन्न विचारों के रूप में समझते हैं। परन्तु, पवित्रशास्त्र, विशेष रूप से बुद्धि या प्रज्ञा साहित्य जैसे अय्यूब की पुस्तक, इन अवधारणाओं को चुनौती से भरी हुई परिस्थितियों के लिए प्रत्येक पहलू के लिए प्रस्तुत करती हैं जिनका सामना परमेश्वर के लोग करते हैं।

चुनौती से भरी हुई परिस्थितियाँ ऐसी परीक्षाएँ हैं क्योंकि वे बहुत ही कठिन होती हैं और धैर्य की मांग करती हैं। परन्तु ऐसी परिस्थितियाँ नैतिक रूप से तटस्थ नहीं रहते हैं। वे ऐसी परीक्षाएँ हैं जो गलत या पाप से भरे हुए तरीकों के प्रति प्रतिक्रिया है। और चुनौती से भरी हुई परिस्थितियाँ परमेश्वर की ओर से जाँच भी हैं। वे ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर जाँच करता है और हमारे मनों की स्थितियों को प्रमाणित करता है।

परीक्षाओं की चुनौती के परिणामस्वरूप आने वाली आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि 1:2 में याकूब नाना प्रकार की परीक्षाओं के बारे में उल्लेख करता है।

नाना प्रकार की परीक्षाएँ

जब याकूब ने कई प्रकार की परीक्षाओं की बात की, तो उसने इसमें उन कई कठिनाओं की ओर संकेत किया जिसमें आरम्भिक कलीसिया में गरीब विश्वासियों और धनी विश्वासियों के मध्य में अशांति और विवादों का होना सम्मिलित था।

एक तरफ तो, याकूब ने गरीब विश्वासियों के द्वारा चुनौतीयों का सामना किए जाने के बारे में बहुत कुछ लिखा है। प्रेरितों के काम 2-6 के अनुसार, वहाँ पर ऐसे बहुत से थे जो कि यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया में गरीब थे। और क्योंकि याकूब ने उन विश्वासियों को लिखा जो यरूशलेम से सताव के कारण चारों ओर बिखर गए थे, परिणामस्वरूप गरीबों की सँख्या में वृद्धि हो गई थी।

1:9 और 4:6 में, याकूब ने इन मसीहियों को "दीन" या यूनानी में *तेपईनोस* (ταπεινός) कह कर पुकारा है। इस शब्द का अर्थ "सामाजिक रूप से कमजोर" होना है। 2:2, 3, 5 और 6 में, उसने उन्हें "कंगाल" या यूनानी में *पोटोखोस* (πτωχός) कह कर पुकारा है। इस शब्द का अर्थ "आर्थिक रूप से वंचित" है। 1:27 में, वह "अनाथों या विधवाओं" का संकेत करता है। पवित्रशास्त्र अकसर इस तरह के समूहों को परिचित देता है जो विशेषकर गरीबी और दुरव्यवहार के कारण कमजोर थे। 2:2 में, याकूब यह संकेत देता है कि इनमें से कुछ दरिद्र विश्वासियों ने "मैले कुचैले कपड़े" पहने हुए थे। और 2:15 के अनुसार, इनमें से कुछ इतने ज्यादा कंगाल थे कि वे "बिना कपड़ों के नंगे उघाड़े और प्रतिदिन के भोजन की घटी" के साथ थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

याकूब इन गरीबों के ऊपर बहुत ज्यादा जोर देता है। इसका संक्षिप्त-अर्थ यह अनुमान निकालते हुए लगाना कि आत्मा में गरीब अर्थात् नम्र होने के द्वारा याकूब हमें इसके द्वारा क्या कहने की कोशिश कर रहा था बहुत ही आसान है। उसके कहने का निश्चित अर्थ यह था कि हमें दीन होना चाहिए, हमें आत्मा में गरीब होना चाहिए, परन्तु वह भौतिक रूप से गरीब लोगों की आवश्यकताओं और परिस्थितियों को सम्बोधित कर रहा था। यह लूका के धन्य वचन के संस्करण, "धन्य है वे जो गरीब हैं," के समान है। और कम से कम याकूब के कहने का अर्थ यह है कि यह भौतिक, सांसारिक गरीबी है। ठीक है, क्योंकि उन्हें विशेष रूप से आशीषित होना था? ठीक है, इसका लेना देना उस तरीके से है जिसमें राज्य कार्य करता है। राज्य कुल मिलाकर कमजोर को ऊपर उठाना और शक्तिशाली को दीन करने के बारे में है। आप इसे अपने जीवन में कर सकते हैं। आप स्वयं को दीन कर सकते हैं यदि आप धनी हैं, यदि आप सामर्थी हैं, यदि आप प्रभावशाली हैं। याकूब का लक्ष्य दीनता, गरीबी, आत्मा में गरीबी के भाव की कटाई करना था। परन्तु साथ ही इसकी तरफ से लोगों के बारे में बोलने के लिए बहुत कुछ है जो कि वास्तव में गरीब हैं, कि आपका खजाना स्वर्ग में है, कि आपके स्रोत अपने गुणों में स्वर्गीय हैं। और इसलिए एक महान् युगान्त आधारित प्रतिलोम आने वाला है, ऐसा जो कि कमजोर को सामर्थी बना देगा – परमेश्वर अपने बचे हुओं को एकत्र करेगा, वह बीमारों को एकत्र करेगा, वह गरीबों को एकत्र करेगा, और वह उन्हें अपने राज्य में शिरोमणि बनाएगा – ऐसा जिसमें घमण्डी की सामर्थ्य दीन की जाएगी। - डॉ. थॉमस ऐल. किनी

याकूब कलीसिया में गरीब और कंगालों के द्वारा सामना की जा रही कई विशेष चुनौतीयों का उल्लेख करता है। इनमें से कुछ का यदि नाम लिया जाए तो, 1:9 में, वह ध्यान देता है कि उनमें से कुछ स्व-बदनामी की परीक्षा में पड़े हुए थे। वे परमेश्वर के चुने हुए होने के नाते अनन्तकाल के उद्धार की महिमा के लिए अपने "ऊँचे पद पर उनके [अपने] घमण्ड करने" के कारण असफल हो गए थे। 3:9 के अनुसार, उनकी परिस्थितियों ने अकसर उन्हें दूसरों को ठेस पहुँचाने की परीक्षा में डाल दिया था, यहाँ तक कि जब वे परमेश्वर का सम्मान करने का अंगीकार कर रहे थे। 3:14 में, याकूब ने चेतावनी दी कि उनमें से कुछ अन्यों के प्रति "कड़वी डाह को एकत्र" करने की परीक्षा में पड़े हुए थे और "स्वार्थी महत्वकांक्षा" से जल रहे थे। परिणामस्वरूप, 4:1 उस परीक्षा को सम्बोधित करता है जिसमें कलीसिया के भीतर "लड़ाइयाँ और झगड़े" सम्मिलित थे। और 5:7 में, याकूब कंगालों को प्रभु के पुन: आगमन की प्रतीक्षा धैर्य के साथ करने के लिए चुनौती देता है कि वे अधीरता से बचें।

दूसरी तरफ, धनी विश्वासियों ने भी परीक्षाओं का सामना किया। प्रेरितों के काम 2-6 के अनुसार, कम से कम यरूशलेम की कलीसिया में कुछ लोगों के पास पर्याप्त मात्रा में धन था कि वे मसीह में गरीब भाईयों ओर बहिनों की देखभाल कर सकते थे। और ऐसा आभासित होता है कि, चाहे वे सताव के कारण बिखरे हुए थे, परन्तु फिर भी कलीसिया में ऐसे बहुत से लोग थे जिन्हें धनी की श्रेणी में रखा जा सकता था।

याकूब इन धनी विश्वासियों का कई तरीकों से विवरण देता है। 1:10, 2:6 और 5:1 में, याकूब उन्हें सामान्यत: "धनी" या यूनानी में *प्लोओसिओस* (πλούσιος) कह कर संकेत देता है। यह समाज के उच्च वर्ग के लोगों के लिए प्रयोग में लाने वाला एक सामान्य शब्द था। 2:6 के अनुसार, उनका सामाजिक स्तर पर्याप्त मात्रा में उँचा था कि वे निरन्तर अन्यों को कचहरियों में घसीट कर ले जाते थे। अध्याय 4:13

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हमें बताता है कि वे पैसा कमाने के लिए व्यापार करने के लिए यात्रा किया करते थे। अध्याय 5:2-3 इंगित करता है कि वे अपने वस्त्रों और अपने सोने-चाँदी में घमण्ड किया करते थे। और 5:5 में, उनमें से कुछ का विवरण "भोग-विलास और सुख-भोगने" वालों के रूप में यापन करते हुए किया जा सकता है।

याकूब जानता था कि धन अपने स्वयं की चुनौती को लेकर आती थी। 1:10 के अनुसार, धनी अपनी नीची दशा को भूलते हुए घमण्ड मे पडने की परीक्षा में पड़ गए थे जिसने उन्हें पश्चातापी पापी होने से दूर कर दिया था। अध्याय 1:27 हमें बताता है कि उनके धन ने उन्हें "संसार के द्वारा भ्रष्ट" होने की परीक्षा में डाल दिया था। अध्याय 2:7 संकेत देता है कि वे कचहरी में झूठी गवाही देने के कारण ईश-निन्दा की परीक्षा में पड़ गए थे। 2:16 में, याकूब ने कहा कि उनका झुकाव गरीबों के लिए कुछ भी नहीं करने का था। 3:9 के अनुसार, गरीबों के साथ, उन्होंने अन्यों को श्रापित किया जब उन्होंने परमेश्वर को सम्मान देने का बहाना बनाया। 3:14 में, वे अपने में अपनी ही प्रकार की "कड़वी डाह और "स्वार्थी महत्वकांक्षा" को रखते थे। वे 4:1 के अनुसार झगड़ों और लड़ाईयों में सम्मिलित होते थे। अध्याय 4:13-16 हमें बताता है कि वे ऐसा जीवन यापन करने के लिए परीक्षा में पड़े हुए थे कि मानो परमेश्वर पर निर्भर न होकर आत्मनिर्भर थे। और 5:3 उल्लेख करता है कि उन्होंने धन का संचय किया था।

स्पष्ट है कि, याकूब के पाठकों में दोनों अर्थात् धनी और गरीब विश्वासियों ने कई प्रकार की चुनौतीयों का सामना किया। और दोनों को ही उस ज्ञान की आवश्यकता थी जिसे याकूब ने उसकी पत्री में देने के लिए प्रस्तावित किया था।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे याकूब अपने ध्यान को उसके पाठकों के द्वारा सामना की गई परीक्षाओं के कारण आवश्यकता से उत्पन्न होने वाले चिन्तनशील ज्ञान की ओर लगाता है, हमें अब दूसरे विषय: कैसे याकूब ने इन परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन का प्रस्ताव दिया, की ओर मुड़ना चाहिए

मार्गदर्शन

मसीह के अनुयायी होने के नाते हम केवल अपने प्रतिदिन के अनुभवों के द्वारा ही मसीही धर्मविज्ञान के कई पहलूओं को समझ सकते हैं। परन्तु अन्य मसीही शिक्षाएँ इतनी सरल नहीं हैं। यदि आप परदे के पीछे हमारे अनुभवों में परमेश्वर के गुप्त प्रयोजनों की गहन जागरूकता में जाना चाहते हैं, तो हमें मार्गदर्शन की आवश्यकता है। और याकूब ने मर्मज्ञ आत्मबोधों का देने का प्रस्ताव दिया है जो हमें चिन्तनशील ज्ञान की– अर्थात् हमारे जीवनों में संघर्षों और परीक्षाओं के प्राप्ति करने में सहायता प्रदान करता है। सुनिए याकूब 1:3-4 में और उस तरीके को जिसमें याकूब इन आत्मबोधों का विवरण देता है जिसे वह चाहता है कि उसके पाठक अपना लें:

> **यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे (याकूब 1:3-4)।**

इस प्रसंग में दिए हुए याकूब के मार्गदर्शन को कई तरीकों से सारांशित किया जा सकता है, परन्तु हमारे प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए हम हमारे ध्यान को चार तत्वों के ऊपर केन्द्रित करेंगे। सर्वप्रथम, याकूब ने कहा कि उनकी चुनौती भरी परिस्थितियाँ उनके विश्वास की परख थी।

परखे जाने

जब याकूब उसके पाठकों जो "उनके विश्वास के परखे जाने" का सामना की चुनौती का विवरण करता है, तो वह यूनानी शब्द *डोकीमीओन* (δοκίμιον) का उपयोग करता है। शब्द परखे जाने का भाव

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

किसी चीज की विशुद्धता का प्रमाणित या निर्धारित करना होता है। इस घटना में, याकूब के मन में उनके विश्वास की विशुद्धता को प्रमाणित करना था।

वास्तव में, याकूब विवरण देता है कि परमेश्वर का उद्देश्य नाना प्रकार की परीक्षाओं के द्वारा यह है कि उसके पाठक धैर्य को प्राप्त करते हुए अपने मने की सच्ची अवस्था का निर्धारण कर लें। उनका "परखे" जाना यह पुष्टि था कि वे उनका विश्वास सच्चा था या नहीं। परमेश्वर के द्वारा परीक्षाओं के लिए यह दृष्टिकोण याकूब के लिए कोई नया नहीं था। यह असंख्य बार दोनों अर्थात् पुराने और नए नियम में प्रगट होता है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 8:2 में, मूसा ने इस्राएल के लोगों से ऐसा कहा था:

> **स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिए ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं (व्यवस्थाविवरण 8:2)।**

बाकी के पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर सभी बातों को जानता है, जिसमें लोगों के मन भी सम्मिलित हैं। परन्तु यह और ऐसे ही अन्य प्रसंग बाइबल आधारित सत्य को दर्शाते हैं, जब परमेश्वर इतिहास में लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित करता है, तो वह अकसर उनके मनों में क्या है, को प्रगट या प्रमाणित करने के लिए कठिनाईयों का उपयोग करता है।

जब याकूब ने मार्गदर्शन प्रदान करने का प्रस्ताव दिया, तो उसने न केवल यह स्थापित किया उसके पाठकों की चुनौतीयाँ उनके विश्वास की परख थी। उसने साथ ही यह इंगित किया कि उनकी परीक्षाएँ धैर्य को उत्पन्न करन के लिए निर्मित की गई थी।

धीरज

याकूब ने यूनानी भाषा के शब्द *हुपोमोन* (ὑπομονή) का उपयोग करते हुए लिखा कि परखे जाना धीरज को उत्पन्न करता है। यह बहुत कुछ हिन्दी के हमारे शब्द "धीरज" से मिलता है, *हुपोमोन* का अर्थ किसी बात को कठिनाई के अधीन होकर उसे सहन करने से है। इस तरह से, याकूब ने विवरण दिया कि परीक्षाएँ विश्वास की गंभीरता को परमेश्वर के लोगों के लिए धैर्य को सक्षम करते हुए और निरन्तर मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ समर्पित रहने के लिए सक्षम बनाती हैं।

सामान्य अर्थों में, मसीही धैर्य के ऊपर नए नियम की शिक्षाएँ दोहरी हैं। एक तरफ तो, धैर्य परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान है। रोमियों 6:1-14 जैसे प्रसंग हमें शिक्षा देते हैं कि मसीह के अनुयायी पवित्र आत्मा के कारण, जिसने यीशु को नए जीवन में उठा खड़ा किया था, अपने विश्वास में धैर्य को या दृढ़ता को थामे रहते हैं, वही हमें जीवन के नवीकरण और विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में चलने के लिए सक्षम बनाता है। इसलिए, यद्यपि धैर्य मानवीय प्रयास की मांग करता है, हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम केवल परमेश्वर के दिए जाते रहने वाले अनुग्रह के कारण जो हमारे भीतर कार्यरत् है, दृढ़ बने रहते हैं।

परन्तु दूसरी तरफ, नया नियम यह भी स्पष्ट करता है कि धैर्य अनन्तकालीन उद्धार के लिए एक आवश्यक मांग है। दूसरे शब्दों में, वे जो बचाने वाले विश्वास को कार्य में लाए हैं, वे आवश्यक रूप से, अपने विश्वास में दृढ़ बने रहेंगे। सुनिए कुलुस्सियों 1:22-23 में पौलुस के शब्दों को:

> **उसने अब [परमेश्वर ने] उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक बनाकर सुरक्षित उपस्थित करे...यदि तुम विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो और सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है ने छोड़ों (कुलुस्सियों 1:22-23)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यहां पर पौलुस पुष्टि करता है कि कुलुस्सियों के मसीही विश्वासीयों ने परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लिया था। परन्तु वे तभी ही आश्वस्त हो सकते थे जब यह तब सत्य था कि यदि वे केवल निरन्तर अपने विश्वास में बने रहते। धैर्य या दृढ़ता से विश्वास में बने रहने की यह शर्त परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उद्धार के सन्देश के विपरीत नहीं थी। इसकी अपेक्षा, यह उस आशा को थामना था जो सुमसाचार आधारित थी।

अपने मार्गदर्शन में, याकूब न केवल विश्वास के परखे जाने के ऊपर विचार विमर्श करता है जो कि धैर्य या दृढ़ता को उत्पन्न करता है। वह साथ ही आगे बढ़ता हुआ परिपक्वता या सिद्धता के ऊपर भी बोलता है जो कि धीरज से निकल कर आता है।

परिपक्वता

याकूब की पत्री की पुस्तक ऐसी है जो कि कुल मिलाकर मसीही सिद्धता के बारे में है। कुछ लोग इस दृष्टिकोण को अपना सकते हैं और सोच सकते हैं कि यह पुस्तक विधिपरायणता के बारे में है; यह नियमों के बारे में है; यह ठीक वही कुछ करने के बारे में जिसे मुझे करने की आवश्यकता है। अपितु यह एक ऐसी वास्तविक पुस्तक है जिसका मंशा एक मसीही विश्वास के रूप में निर्मित होने, विशेषकर सभी तरह के कठिन सामाजिक संदर्भों में जिसमें हम रहते हैं उनमें एक मसीही जीवन को यापन करने में सहायता करने के लिए है। कलीसिया एक कठिन स्थान हो सकता है; याकूब ने इसे पहचान लिया था। और आपको संसार में, कलिसिया में, जीवन यापन करने, इस संसार में और इस कलीसिया में पनपने के लिये क्या करना चाहिए, यह परिपक्वता है; आपको पूर्ण होने और सिद्ध होने की आवश्यकता है। और याकूब आपको वास्तव में बताता है कि इसे कैसे प्राप्त किया जाता है, कैसे इस जीवन को परिपक्व किया जाता है, जो कुछ संसार, जो कुछ शैतान, जो कुछ शरीर आपके ऊपर आपके मार्ग में फेंकने की कोशिश करता है, उसका सामना करने के लिए तैयार होना। और इसका आरम्भ, याकूब के बारे में रूचिपूर्ण बात यह है कि यह वास्तव में दुख से आरम्भ होता है। दुख अति महत्वपूर्ण हैं; यही संदर्भ है; यही वह व्यायामशाला है जहाँ मसीह परिपक्वता उत्पन्न होती है। यही वह स्थान है जहाँ आपके विश्वास को प्राप्त किया जाता और यह विकास करता और जो कुछ आने वाल०ा है उसका सामना करने के लिए तैयार होता है। जब आप दुखों, परीक्षाओं, और परखे जाने को सहन करते और बच जाते हैं, तो आपका विश्वास, आत्मा के द्वारा, मसीह और उसकी व्यवस्था और उसके ज्ञान के द्वारा वचन से कार्य करता हुआ, विकास करता, सामर्थी और आने वाली परीक्षाओं के लिए तैयार होता है।

- डॉ. थॉमस ऐल. किनी

एक बार फिर सुनिए याकूब ने 1:4 में एक क्या लिखा है:

पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे (याकूब 1:4)।

क्योंकि परीक्षाएँ और धैर्य परिपक्वता को उत्पन्न करते हैं, याकूब ने अपने पाठकों से कहा कि धीरन को अपना पूरा कार्य करने दो। धीरज उन्हें पूर्णता और सिद्धता की ओर जाएँगा और उन्हें किसी बात की घटी न होगी।

अब, हमें यहाँ पर सावधान होना होगा। याकूब के मन में पूर्णता या किसी भी बात की घटी इस अर्थ में नहीं थी कि हम इस जीवन में नैतिक सिद्धता तक नहीं पहुँच सकते हैं। हम 1 यूहन्ना 1:8 जैसे प्रसंगों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

से जानते हैं कि, "यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं है।" परन्तु याकूब के मन में यह बात थी कि हम निरन्तर परमेश्वर की आज्ञाकारिता में, और, उस न्याय के लिए जो तब आएगा जब मसीह का पुन: आगमन होगा, में बढ़ते चले जाएँ तब हम हमारे जीवनों में किसी भी ऐसी बात की घटी को नहीं पाएँगे जो हमें इसके अयोग्य घोषित कर दे।

परखे जाने, धीरज और परिपक्वता के सम्बन्ध में मार्गदर्शन प्रदान कर लेने के पश्चात्, याकूब ने इंगित किया, कि इस प्रक्रिया के अन्त में, एक बड़ा पुरस्कार रखा हुआ है।

पुरस्कार

वह इस पुरस्कार का उल्लेख 1:12 में करता है जब वह ऐसा कहता है कि:

धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है (याकूब 1:12)।

जब याकूब यह विवरण देता है, तो प्रत्येक जो परीक्षा में स्थिर बना रहता है वह जाँच में खरा उतरता है। और वह जीवन का मुकुट पाएगा, परमेश्वर के महिमामयी राज्य में अनन्तकाल का जीवन का मुकुट जिसकी प्रतिज्ञा उसने [प्रभु ने] उनसे की है जो उससे प्रेम करते हैं। इन सभी दृष्टिकोणों को एक साथ ले आने पर, याकूब आपने पाठकों को मर्मज्ञ चिन्तनशील ज्ञान का प्रस्ताव देता है। वह उन्हें उन परीक्षाओं के लिए समझ का मार्गदर्शन देता है जिनका सामना वे कर रहे थे। वास्तव में, प्रत्येक परख परमेश्वर का एक उपहार है, जो उनकी अनन्तकाल की भलाई के लिए तैयार की गई है।

कई बातों में से एक दुखों को धैर्य के साथ सहन करने की महत्वपूर्णता है जिसे याकूब अपनी पत्री के आरम्भ में ही बात करता है, और यह लगातार उसकी पत्री में प्रगट होती रहती है। और यही वह वास्तविकता है जो कि मसीही परिपक्वता की ओर ले चलती है। अध्याय 1 के आरम्भ में वह कहता है कि, "हे मेरे भाईयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़े, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो।" और तब वह यह विवरण देता है कि क्यों: "क्योंकि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।" और तब वह आगे कहता चला जाता है कि: "पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न हो।" और इस तरह से, हम सोच सकते हैं कि दुख वह चिन्ह हैं कि परमेश्वर हमारे साथ नहीं है, परन्तु याकूब दुखों को ऐसे चिन्ह के रूप में देखता है कि परमेश्वर कार्यरत् है, न कि हमारे दुखों के होने पर भी, अपितु हमारे दुखों में से होकर जाने के द्वारा वह हमें जो चाहता है वैसा बनाना चाहता है। और यही वह स्थान है जहाँ पर हम वास्तव में परिपक्वता में बढ़ते हैं। वह आगे कहता है कि, "धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है" – यह अध्याय 1 की 12वें वचन में मिलता है - "क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों से की है।" इस तरह से वह हमें दुखों के ऊपर सोचने के लिए एक भिन्न ही उदाहरण देता है। यह कुछ ऐसा है जिसे वास्तव में अन्देखा नहीं करना चाहिए, न ही इसका चाहत करनी चाहिए, परन्तु हमारी संस्कृति में हम दुखों से बच कर सफलता को प्राप्त करने की कोशिश करने के लिए सोचते हैं, परन्तु वह हमें वृद्धि करने के अवसर का विवरण देता है। यह मसीही परिपक्वता के लिए कार्य किए जाने के लिए महत्वपूर्ण है। - रेव्ह. डॉ थिरूमान विलियम्स

याकूब अपने ध्यान को चिन्तनशील ज्ञान के ऊपर अपने पाठकों की उनकी थका देने वाली परिस्थितियों में आवश्यकता के लिए सम्बोधित करता है। यह साथ ही मार्गदर्शन का प्रस्ताव देता है। परन्तु अब आइए हम उस ओर मुड़े कि कैसे चिन्तनशील ज्ञान के मार्ग के लिए विश्वास की आवश्यकता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विश्वास

जब आप इसके बारे में सोचते हैं, जिन आत्मबोधों को याकूब उसके उन परीक्षाओं में पाठकों को देता है वह मसीही शिक्षाओं में सामान्य हैं। परन्तु हम सभी जानते हैं कि जब हमारे जीवनों में परेशानियाँ आती हैं, तो हम इतने ज्यादा अभिभूत हो जाते हैं कि हमारे लिए यहाँ तक कि मूल मसीही मान्यताओं को थामे रखना भी कठिन हो जाता है। और ऐसा प्रतीत होता है कि याकूब को डर था कि यही उसके पाठकों के साथ भी सत्य था। इसलिए, वह तुरन्त इंगित करता है कि इन आत्मबोधों को थामने, जिन्हें उसने उन्हें प्रस्तावित किया है, के लिए परमेश्वर की ओर विश्वास से मुड़ने की आवश्यकता है। याकूब 1:5 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं कि:

> **पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उस को दी जाएगी (याकूब 1:5)।**

याकूब जानता था कि हमें परीक्षाओं में परमेश्वर के अकसर गुप्त प्रयोजनों को समझना लिए बुद्धि चाहिए, हमें इसके लिए "परमेश्वर से मांगना" चाहिए। परन्तु इसके पश्चात्, 1:6-8 में, याकूब बुद्धि को विश्वास के साथ प्रार्थना से जोड़ता है जब वह यह कहता है कि:

> **पर वह विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करनेवाला... यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा; वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है (याकूब 1:6-8)।**

जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, याकूब आग्रह करता है कि बुद्धि के लिए प्रार्थना को विश्वास से किया जाना चाहिए। अन्यथा हम दुचित्ते लोग होंगे।

दुर्भाग्य से, अधिकांश अच्छे विश्वास वाले मसीही विश्वासी ने याकूब के विश्वास के साथ मांगने के और दुचित्ते न होने के इन निर्देशों को गलत समझ लिया है। वह सोचते हैं कि याकूब विशेष तरह की प्रार्थना जिसे हम करते हैं में भरोसा होने की ओर संकेत दे रहा है। अकसर, मसीही के अनुयायी विश्वास करते हैं कि यदि हमारे पास केवल पर्याप्त विश्वास हो, तो परमेश्वर हम जिस तरह से इच्छा करते हैं वैसे ही हमें उत्तर देगा। परन्तु ऐसा याकूब के मन में बिल्कुल भी नहीं था। क्योंकि याकूब के लिए, "विश्वास से मांगने" का अर्थ "परमेश्वर के प्रति विश्वासयोय" होना था। हम इसे जानते हैं क्योंकि याकूब "विश्वास में" मांगने के विपरीत बात करता है जो कि "दुचित्ता-मन" वाले होना है। और याकूब के लिए, दुचित्ते-मन वाले होने का अर्थ परमेश्वर के विरूद्ध गंभीर विद्रोह का होना था। सुनिए 4:8-9 और उस तरीके को जिसमें याकूब ने दुचित्ता-मन वालों के बारे में बोला है:

> **हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो। दुखी होओ, और शोक करो, और रोओ। तुम्हारी हँसी शोक से और तुम्हारा आनन्द उदासी से बदल जाए (4:8-9)।**

यहाँ पर ध्यान देंगे कि दुचित्ते-मन वाले लोग न केवल वही लोग नहीं हैं जो विश्वास को पाने में असफल हो जाते हैं जब वे प्रार्थना करते हैं। वे ऐसे पापी हैं जिन्हें अपने मनों को अवश्य शुद्ध करना चाहिए। उनकी अविश्वासयोग्यता इतना ज्यादा गंभीर है कि उनके लिए शोक करना और रोना उचित है।

इसलिए, याकूब की पत्री के संदर्भ में, उसके मन में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसमें न केवल आत्मविश्वास की कमी है जिसकी प्रार्थना का उत्तर परमेश्वर देगा। उसके मन में परमेश्वर की भलाई के प्रति एक मौलिक इन्कार के किए जाना है। ऐसा प्रतीत होता है कि याकूब के पाठकों में से कुछ ने परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

के ऊपर अपनी विफलता के लिए दोष लगाया था। उन्होंने तर्क दिया था कि परमेश्वर ने उनके ऊपर परीक्षाओं को भेजा था, इसलिए परमेश्वर अवश्य ही बुरा था क्योंकि वह उन्हें पाप करने के लिए परीक्षा में डाल रहा था। इस तरह का परमेश्वर के विरूद्ध खुल्लमखुल्ला विद्रोह था जिसे याकूब "दुचित्ते-मन" वालों के रूप में इंगित कर रहा था। सुनिए 1:13-14 को जहाँ पर याकूब इस गंभीर गलत धारणा को सम्बोधित करता है:

> **जब किसी ही परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, "कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है," क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वही किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंचकर, और फँसकर परीक्षा में पड़ता है (याकूब 1:13-14)।**

यह ध्यान देना अति महत्वपूर्ण है कि यूनानी शब्द "परीक्षा" का अनुवाद यहाँ पर क्रिया *पेईराज़ो* (πειράζω), से किया गया है, जो वही शब्दावली है जिसका अनुवाद 1:2 में "परख" के लिए किया गया है। परन्तु याकूब जोर देता है कि वह [परमेश्वर] स्वयं कभी किसी को परीक्षा में नहीं डालता है। यह अनुवाद ठीक ही गहनता से यूनानी सर्वनाम *आऊटोस* (αὐτός) या "स्वयं" के लिए उपयोग को दर्शाता है। यह केवल यही मात्र नहीं कहता है कि परमेश्वर "किसी को" - "परीक्षा" – या परखता है। वह शाब्दिक रूप से कहता है, "वह [परमेश्वर] *स्वयं* किसी को परीक्षा में नहीं डालता है।"

जैसा कि हम अय्यूब की पुस्तक के पहले अध्याय से सीखते हैं कि, परमेश्वर सभी परीक्षाओं, परखे जाने और जाँचों को अपने नियंत्रण में रखता है। परन्तु स्वर्गीय न्यायलय के नाटक में, यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर का अय्यूब के लिए परीक्षा में दिए जाने का प्रयोजन अय्यूब की भलाई के लिए था, न कि उसके नुक्सान के लिए। शैतान, न कि परमेश्वर, ने अय्यूब का परख में डालने के द्वारा पाप में पड़ने की परीक्षा में डाल दिया।

इसलिए बुद्धि के लिए प्रार्थना करना और दुचित्ते-मन वाले न होना बाइबल आधारित सबसे मूल शिक्षाओं की पुष्टि करता हैं: अर्थात् परमेश्वर की भलाई। हमें परमेश्वर की भलाई में बिल्कुल भी सन्देह नहीं करना चाहिए जब हम परमेश्वर से थका देने वाले परिस्थितियों में बुद्धि की मांग करते हैं। अन्यथा, हमारे पास विश्वास करने के लिए कोई भी कारण नहीं होगा कि परमेश्वर हमें बुद्धि देगा। जैसे याकूब 1:17 में लिखता है:

> **क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है (याकूब 1:17)।**

परमेश्वर "ज्योतियों का पिता" है। वह सदैव "अच्छी" वस्तुएँ और "उत्तम" वरदानों को देता है। इसलिए हमारी परीक्षा के लिए उसका प्रयोजन सदैव भलाई और उत्तमता के लिए होता है। यह हमारे विश्वास के लिए दृढ़ समर्पण होना चाहिए जब हम बुद्धि की प्राप्ति के मार्ग के ऊपर चलते हैं।

याकूब में पाए जाने वाले ज्ञान के दो मार्गों के ऊपर हमारे अध्ययन में, हमने याकूब के चिन्तनशील ज्ञान के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है। अब हम इस स्थिति में पहुँच गए हैं कि हम हमारे दूसरे विषय: व्यवहारिक ज्ञान की ओर मुड़े। नए नियम की यह पुस्तक ज्ञान को व्यवहार में लागू करने के बारे बारे क्या कुछ कहती है?

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

व्यवहारिक ज्ञान

किसी एक समय या किसी अन्य समय हम सभी ऐसे लोगों से मिले हैं जिन्हें बहुत ज्ञान रहा है। वे प्रत्येक को अपनी बातों से प्रभावित कर लेते हैं कि वे कितनी अधिक चीजों के बारे में जानते हैं जिन्हें अन्य लोग नहीं जानते हैं। परन्तु कई बार, यही लोग व्यवहारिक जीवन के बारे में बहुत अधिक नहीं जानते हैं। वे नहीं जानते हैं कि कैसे अपने आत्मबोधों को सही कर्मों और व्यवहार में डालना चाहिए। कई तरह से, याकूब इसी ही समस्या का समाधान को अपनी पुस्तक में सम्बोधित करता है। जैसा कि हमने देखा है, वह अपनी पत्री को *चिन्तनशील* ज्ञान के ऊपर जोर देने के द्वारा आरम्भ करता है। वह जानता था कि उन परीक्षाओं जिनका हम सामना करते हैं के पीछे परमेश्वर के गुप्त प्रयोजनों में पाए जाने वाले आत्मबोध कितने महत्वपूर्ण हैं। परन्तु साथ ही वह *व्यवहारिक* ज्ञान के ऊपर भी जोर देता है – ऐसी क्षमता है जो इस ज्ञान को परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए कर्मों और व्यवहारों में लागू करती है।

सरलता के लिए, हम व्यवहारिक ज्ञान का निष्पादन उन तरीकों में करेंगे जो कि हमारे पहले के विचार विमर्श के समान्तर हैं। सर्वप्रथम, हम व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता को देखेंगे। दूसरा, हम यह ध्यान **देंगे** कि कैसे याकूब ने अपने पाठकों को मार्गदर्शन दिया। और तीसरा, हम विश्वास और कार्य व्यवहार में सम्बन्ध को देखेंगे। आइए सबसे पहले यह देखें कि कैसे याकूब ने उसके पाठकों के पास व्यवहारिक ज्ञान के होने की आवश्यकता पर बल दिया है।

आवश्यकता

जैसा कि हमने पहले देखा, याकूब ने शब्द "ज्ञान" और "बुद्धिमानी" को दो संदर्भों में उपयोग किया है। इन दोनों में से पहला 1:2-18 में पाया जाता है जहाँ याकूब ने चिन्तनशील ज्ञान के ऊपर बल दिया है। दूसरा 3:13-18 में पाया जाता है जहाँ पर याकूब ने ज्ञान को कार्य व्यवहार में लागू करने की आवश्यकता के ऊपर जोर दिया है।

> **याकूब एक बहुत ही व्यवहारिक पत्री है, और वह वास्तव में यह सुनिश्चित करना चाहता था कि लोग जो कुछ वे विश्वास करते हैं उसे कार्य व्यवहार में लाए। वह इसे कहाँ से पाता है? ठीक है, एक बार फिर से मैं सोचता हूँ कि इसका उत्तर यीशु स्वयं है। मेरे कहने का अर्थ है, स्वयं यीशु ने चट्टान के ऊपर घर का निर्माण करने के लिए दृष्टांत दिया, और निर्धारित करने वाला कारक यह है कि, "क्या तुम वह कर रहे हो जिसका आदेश मैंने तुम्हें दिया है? जो कुछ मैंने तुम्हें शिक्षा दी क्या उसे तुम कार्य व्यवहार में ला रहे हो? इसी को यीशु देखना चाह रहा है। वह विश्वास को कार्य व्यवहार में लाने वाले लोगों की चाह कर रहा था। उसने साथ ही फ़रीसियों को चेतावनी दी, "इसलिए वे तुमसे जो कुछ कहें वह करना और मानना, परन्तु उनके से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।" इस तरह से, यीशु बातों को कार्य व्यवहार में लाने के विषय के ऊपर बहुत अधिक गंभीर रहा था, और मैं सोचता हूँ, कि इसलिए, याकूब, एक अर्थ में, अपने भाई यीशु की नकल उतार रहा था, कि उसका कहना वास्तव में महत्वपूर्ण है। कदाचित् इसका एक दूसरा कारण भी होगा, एक बार फिर से, जिसका अनुमान हम आरम्भ की कलीसिया से लगा सकते हैं, और वह यह है कि हो सकता है कि याकूब ने पहले से ही देखना आरम्भ कर लिया होगा कि यह मसीही विश्वासियों के लिए गवाही देना कितना नुकसानदायक था जब इसकी मण्डली में से कुछ यहूदी मसीही विश्वासी वास्तव में यीशु के जीवन को प्रदर्शित नहीं कर रहे थे। आप जानते हैं, कि उनके पास यीशु के बारे में बड़े धर्मसिद्धान्त थे, परन्तु वे असल में इन्हें कार्य**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

व्यवहार में नहीं ला रहे थे, और आलोचना आ सकती थी, "कि तुम जो प्रचार करते हो उसके अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करते हो," और यह मसीही सन्देश को एक बुरा नाम देगा...स्वयं यीशु ने कहा, "सिद्ध बनो," और याकूब इस शिक्षा को दुहराता है। वह चाहता है कि लोग बातों को कार्य व्यवहार में लाए, और इसी बात का जोर हम यहाँ देखते हैं। - डॉ पीटर वॉल्कर

सुनिए 3:13 को और उस तरीके को जिसमें याकूब व्यवहारिक ज्ञान के मूल सिद्धान्तों को परिचित कराता है:

तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है (3:13)।

जब हम यह स्मरण करते हैं कि याकूब के पाठकों में से बहुत से यहूदी विश्वास से आए हुए विश्वासी थे जो कि पुराने नियम से परिचित थे, तो यह समझना कठिन नहीं है कि क्यों इनमें से कुछ ने "ज्ञानवान और समझदार" होने का दावा। परन्तु याकूब ने जोर दिया कि यदि उनका यह दावा वास्तविक था तो वह इसे "अच्छे चाल चलन से" प्रगट करें। दूसरे शब्दों में, उन्हें *व्यवहारिक* ज्ञान की आवश्यकता थी। पुराने नियम की शिक्षा के प्रभाव के अधीन – विशेषकर नीतिवचन की पुस्तक के – याकूब जानता था कि ज्ञान का मूल्य गहन मर्मज्ञ धर्मवैज्ञानिक आत्मबोधों से ज्यादा होता है।

वे जिन्होंने पूरे मन से समझ से इसे परमेश्वर से अपना लिया था वह एक "अच्छा जीवन" व्यतीत करेंगे जो कि "ज्ञान से आता" है। परन्तु याकूब ने यह भी इंगित किया है कि अच्छा जीवन "कर्मों" और "कार्यों" को सम्मिलित करता है, जैसा कि इसका अनुवाद किया जा सकता है। और इसमें निश्चित व्यवहार सम्मिलित हैं, जैसे "नम्रता।" जैसा कि हम देखेंगे, सह कर्म और व्यवहार दोनों व्यवहारिक ज्ञान के लिए अति आवश्यक हैं।

व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता की और अधिक व्याख्या करने के लिए, याकूब दो तरह के व्यवहारिक ज्ञान की तुलना करता है जिसे हमने इस अध्याय के आरम्भ में ही उल्लेख कर दिया है। वह सबसे पहले सांसारिक ज्ञान की ओर संकेत देते है। और तब, वह स्वर्गीय ज्ञान के बारे में बोलता है। आइए पहले सांसारिक ज्ञान के ऊपर देखें।

सांसारिक ज्ञान

3:14-16 में, हम सांसारिक ज्ञान के ऊपर इस विवरण को पाते हैं:

पर यदि तुम अपने-अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। क्योंकि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है (याकूब 3:14-16)।

जैसा कि हमने इस अध्याय के पहले आधे हिस्से में देखा, याकूब कलीसिया में गरीब और धनी विश्वासियों के मध्य फैली अशांति को लेकर बहुत अधिक चिंतित था। और 3:14 में, वह इस तथ्य को ले आता है कि कलीसियाओं में बहुत से विश्वासी "[अपने] मन में कड़वी डाह और विरोध अर्थात् स्वार्थी महत्वकांक्षा रखते [थे]।" और वचन 15 के अनुसार, कम से कम उनमें से कुछ अपने इन व्यवहारों को "ज्ञान" कह कर न्यायोचित ठहराते थे। परन्तु याकूब ने उन्हें चेतावनी दी कि वे जो कुछ कर रहे हैं उनके

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बारे में किसी भी तरह से घमण्ड न करें या सत्य का इन्कार न करें जिसके बारे मे वह उन्हें व्याख्या करने पर था।

बहुत से आधुनिक मसीही विश्वासियों को इस बात को आत्मसात् करने में कठिनाई होती है कि क्यों याकूब आरम्भिक कलीसिया में गरीब और धनी विश्वासियों के मध्य के संघर्ष के बारे में इतनी ज्यादा गहनता से चिंतित था। आज भी कलीसिया में गरीब और धनी विश्वासी पाए जाते हैं, विशेष रूप से जब हम विभिन्न देशों के मसीहियों की आपस में तुलना करते हैं। परन्तु आधुनिक संसार में, स्थानीय मण्डलियों का झुकाव पहली सदी की आरम्भिक कलीसिया की अपेक्षा अधिक समाजिक सजातीयता की ओर होता है। धनी विश्वासी उन लोगों के साथ कलीसिया में जाते हैं जो धनी हैं, और गरीब मसीहियों का झुकाव कलीसिया में उन लोगों के साथ जाने का होता है जो कि गरीब हैं। परन्तु कल्पना करें यदि आपकी स्वयं की कलीसिया में अत्यन्त गरीब और अत्यन्त धनी पाए जाते हो। तो यह कितना अधिक गुटबंदी को उत्पन्न करेगा? कुछ विश्वासी कलीसिया में फटे कपड़ों में आऐंगे, यह न जानते हुए कि उनका अगला भोजन कहाँ से आ रहा है, जबकि अन्य इसी कमरे में मँहगे कपड़े पहने हुए, धन से भरी हुई जेबों के साथ बैठे होंगे। यदि यह आपकी स्थानीय कलीसिया की घटना है, तो आपकी कलीसिया अशांति में आ जाएगी।

याकूब के दिनों में गरीब और धनी के मध्य में संघर्षों ने उन कलीसियाओं जिन्हें वह सम्बोधित कर रहा था, में बहुत ज्यादा नुकसान पहुँचाया था। ऐसा प्रतीत होता है कि, गरीबों ने पूरी तरह से धनी विश्वासियों के प्रति अपनी डाह में यहाँ तक कि स्वयं को बुद्धिमान मानते हुए न्यायसंगत अनुभव किया था। वे पुराने नियम के नीतिवचनों को जानते थे जो धनी को गरीबों के प्रति उदार होने के लिए निर्देश देते थे। इस तरह से, उनकी मसीही भाई बहिन को चाहिए था कि जो कुछ उनके पास उसे वे उनके साथ सांझा करते। और धनी विश्वासियों ने स्वयं स्वार्थी होते हुए यहाँ तक कि पूरी तरह से बुद्धिमान अनुभव किया। वे पुराने नियम के नीतिवचनों का उद्धरण दे सकते थे जो गरीबों को आलसी होने के लिए दोषी ठहराता है और अपने धन को कठिन मेहनत के पुरस्कार के रूप में ठहराता है।

परन्तु याकूब ने इंगित किया कि इस तरह का ज्ञान सामान्य रूप से भ्रान्तपूर्ण या पथ से भटके हुए होने की अपेक्षा बहुत अधिक खतरनाक था। यह सांसारिक, पवित्रशास्त्ररहित, या स्वाभाविक और शैतानिक था। और इसके शैतानिक होने के मूल के प्रमाण गलत नहीं थे। इसने कलीसिया में हर प्रकार के बखेड़े और दुष्कर्म की ओर मार्गदर्शन दिया था।

> **मैं सोचता हूँ कि प्रत्येक ऐसे लोगों से परिचित होंगे जो स्वयं को अपनी दृष्टि में बुद्धिमान समझते हैं, और इस तरह का ज्ञान अकसर घमण्ड, शत्रुतापूर्ण स्वभाव, प्रतिकूल होने की इच्छा के साथ चिन्हित किया जाता है। और याकूब कहता है कि यह परमेश्वर का ज्ञान नहीं है। सच्चाई तो यह है कि, इस तरह का ज्ञान, सांसारिक ज्ञान है, या जिसे वह नीचे से आने वाला ज्ञान कह कर पुकारता है, वास्तव में केवल खतरनाक या अनुपयोगी होता है – वह वास्तव में इसे "शैतानिक" कह कर पुकारता है। जबकि, ज्ञान जो परमेश्वर की ओर से आता है वह ऐसा ज्ञान होता है जो प्रभु के डर के कारण निकल कर आता है, और परिणामस्वरूप, इसे नम्रता से चिन्हित किया जाता है; इसे तरस से चिन्हित किया जाता है; इसे प्रभु की विश्वासयोग्यता से चिन्हित किया जाता है, परमेश्वर ही वह है जो यह पहचान करता है कि यह ज्ञान उनके स्वयं की ओर से उत्पादित हुआ ज्ञान नहीं है, अपितु इसकी अपेक्षा यह स्वयं परमेश्वर की ओर से उत्पन्न हुआ ज्ञान है जिसने इसे उन्हें बड़ी उदारता के साथ दिया है, जैसा कि याकूब कहता है। यही उस तरह का ज्ञान है, जिसे मसीहियों**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

को, जो यीशु मसीह के, जो कि उत्तम ज्ञानी बुद्धिमान है – सुलेमान से भी उत्तम ज्ञानी बुद्धिमान है, के अनुयायी हैं– के पास होना चाहिए – यही वह ज्ञान है जिसे उसके अनुयायी के पास संभावित उनके जीवनों में व्यक्त करता हुआ होना चाहिए। - डॉ स्कॉट रीड

अन्त में, परमेश्वर के कार्य को आगे बढ़ाने की अपेक्षा, मसीह की देह, स्वयं में संघर्षरत् होकर विभाजित हो गई। जिन मण्डलियों को याकूब ने लिखा था वे शैतान का शिकार हो गई जिन्होंने परमेश्वर के कार्य को नाश कर देना चाहा। और यह वही विनाश था जिसने याकूब को प्रेरित किया कि वह उसके पाठकों को व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता के ऊपर जोर दे।

नाश करने वाले, सासांरिक ज्ञान को अस्वीकार करते हुए व्यवहारिक ज्ञान का निष्पादन करने के पश्चात्, याकूब तुरन्त एक वैकल्प की ओर मुड़ता है, जिसे वह स्वर्गीय ज्ञान कह कर पुकारता है।

स्वर्गीय ज्ञान

3:17 में, याकूब ने इस सकारात्मक स्वर्गीय ज्ञान का विवरण दिया है:

पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है (3:17)।

यहाँ पर हम देखते हैं कि याकूब के मन में स्वर्गीय ज्ञान के बारे में है, अर्थात् ऐसा ज्ञान जो परमेश्वर की ओर से आता है। यह ज्ञान मिलनसार, कोमल और मृदुभाव, दया से भरा हुआ और अच्छे फलों से लदा हुआ, पक्षपात और कपट-रहित होता है। दूसरे शब्दों में, स्वर्ग से आने वाला ज्ञान डाह और स्वार्थी महत्वाकांक्षा को न्यायसंगत नहीं ठहराता है, न ही यह ऐसा गरीब और न ही यह ऐसा धनी में करता है। परमेश्वर प्रदत सच्चा ज्ञान शान्ति को बढ़ावा देता है। और परमेश्वर के लोग इस शान्ति को दूसरों के साथ मिलनसार होकर, अन्य के साथ कोमल और दयालु होकर प्रदर्शित करते हैं। वे अच्छे फलों को उत्पन्न करते हैं और किसी एक समूह या किसी के साथ पक्षपात को प्रगट नहीं करते हैं। और ये सभी कर्म और व्यवहार मसीह की गंभीर भक्ति से निकल कर आते हैं।

ऊपर से आने वाला ज्ञान, जो परमेश्वर की ओर से आता है – क्योंकि यह ऊपर से है – इसमें कोई सन्देह नहीं है, स्वयं परमेश्वर के व्यवहार का प्रतिबिम्ब है। याकूब कहता है कि यह खरा है, यह शान्ति से भरा हुआ है, यह कोमल है, यह अच्छे फलों से लदा हुआ है, यह दयालु है और यह अटल रहने वाला है, और यह गंभीर हैं या दूसरे शब्दों में कपटरहित है, जिसका अर्थ वास्तव में ऐसे व्यवहार से है जो कि यीशु का वर्णन करता है। यीशु के पास ऐसी बातें थी। और याकूब कहता है कि यही वे बातें हैं – जो आपको जीवन में आगे नहीं जाने देंगी, वे आपको सफल नहीं होने देंगी, इनका यह अर्थ नहीं है, कि यह आपको बड़े मकान में नहीं रहने देंगी, परन्तु इनके अपने परिणाम हैं, याकूब कहता है, कि धार्मिकता और शान्ति; दूसरे शब्दों में वास्तविक शालोम, वास्तविक शान्ति। और रूचिपूर्ण यह है कि प्रत्येक वास्तव में इसी शालोम को, पूर्णता को, सम्पूर्णता को, शान्ति को चाहता है। वह ऐसी बातों को चाहते हैं, और वे सोचते हैं कि यह सांसारिक ज्ञान है जो उन्हें यह सब कुछ दे देगा, परन्तु वास्तव में इस तरह की शान्ति-केवल उसी ज्ञान के परिणामस्वरूप आती है जो कि ऊपर से आता है, जो स्वयं की उन्नति को नहीं चाहता है, अपितु, याकूब अध्याय 3 के वचन 13 में कहता है कि यह नम्रता, दीनता के गुण के द्वारा चित्रित होता है, न कि स्वयं की उन्नति की चाह है, अपितु इसकी अपेक्षा अन्यों की भलाई और स्वास्थ्य को चाहता है। - डॉ डॉन मैक्कारटनी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

3:18 में, याकूब अपने पाठकों को सबसे अधिक जाने-पहचाने नीतिवचन की ओर इंगित करता है:

मिलाप कराने वाले धार्मिकता का फल मेल मेल-मिलाप के साथ बोते हैं (याकूब 3:18)।

बहुत कुछ यीशु के द्वारा मत्ती 5:9 में कहे हुए धन्य वचनों में मेल कराने वालो की तरह, याकूब यह स्पष्ट कर देता है कि कलीसिया में गरीब और धनी अपनी धार्मिकता के लिए बहुत बड़े पुरस्कार को प्राप्त करेंगे – यदि वे वैसे बन जाएँ जो कलीसिया में शान्ति को स्थापित करते हैं।

अब क्योंकि हमने व्यवहारिक ज्ञान को देख लिया है और उस आवश्यकता को भी देखा है जिसके कारण याकूब ने इस विषय के ऊपर अपनी पत्री में बहुत ज्यादा समय व्यतीत किया है, हमें अब उस मार्गदर्शन की ओर मुड़ना चाहिए जो उसने अपने पाठकों को दी कि कैसे उन्हें परमेश्वर के ज्ञान को कार्य व्यवहार में लागू करना चाहिए।

मार्गदर्शन

यह मसीह के अनुयायियों के लिए सामान्य बात है कि वे व्यवहारिक धर्मविज्ञान की आवश्यकता के बारे में बहुत बातें करते हैं। हम ऐसे सन्देशों को चाहते हैं जो कि व्यवहारिक हों। हम ऐसे अध्यायों को चाहते हैं जो हमें यह बताएँ कि जीवन को कैसे यापन किया जाता है। और संसार के बहुत हिस्सों में, विश्वसनीय सामग्री उपलब्ध है जो हमें हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन देती है। परन्तु याकूब की पत्री की पुस्तक हमें उन मापदण्डों और प्राथमिकताओं को स्मरण दिलाता है जिन्हें अकसर उस समय भूला दिया जाता है जब हम हमारे प्रतिदिन के जीवनों के लिए ज्ञान का अनुसरण करते हैं।

व्यवहारिक जीवन यापन करने के लिए मार्गदर्शन के बारे में याकूब की पत्री में बहुत सी विशेष बातें पाई जाती हैं। परन्तु, हम स्वयं को दो सरोकारों तक ही सीमित रखेंगे। सर्वप्रथम, हम यह ध्यान देंगे कि कैसे याकूब ने परमेश्वर की व्यवस्था के मापदण्ड को उचित ठहराया। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि याकूब ने परमेश्वर की व्यवस्था की कुछ निश्चित प्राथमिकताओं को बढ़ावा दिया। आइए सर्वप्रथम हम परमेश्वर की व्यवस्था के मापदण्ड को देखें।

परमेश्वर की व्यवस्था के मापदण्ड

अधिकांश आधुनिक मसीही विश्वासी उस चेतावनी के प्रति जागरूक हैं जिसे नया नियम परमेश्वर की पुराने नियम की व्यवस्था के बारे में उठाता है। क्योंकि सबसे पहले, हम जानते हैं कि उद्धार अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा है, न कि कर्मों के कारण। और हम सही रूप से व्यवस्था की आज्ञाकारिता के द्वारा मुक्ति को कमाने के प्रत्येक प्रयास के विरूद्ध खड़े होने के द्वारा पौलुस की गलातियों जैसी पुस्तकों में दिए हुए महत्व का पालन करते हैं।

इसके अतिरिक्त, हम जानते हैं कि हमें परमेश्वर की व्यवस्था को लागू नहीं करना चाहिए जैसे कि मानो हम अभी भी पुराने नियम के दिनों में जीवन यापन कर रहे हो। हम सही रूप से इब्रानियों जैसी पुस्तकों का पालन करते हैं और परमेश्वर की व्यवस्था को उन तरीकों में लागू करते हैं जिसमें मसीह और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं ने नए नियम के युग में लागू करने की हमें शिक्षा दी है।

अब, जितनी भी महत्वपूर्ण यह चेतावनियाँ क्यों न हों, हम इन्हें याकूब की पत्री में नहीं पाते हैं। इसकी अपेक्षा, याकूब ने परमेश्वर की व्यवस्था को बहुत अधिक सकारात्मक शब्दों में इंगित किया है। उसने इस बात पर जोर दिया है जिसे पारम्परिक रूप से "व्यवस्था का तीसरा उपयोग" कह कर पुकारते हैं। हम व्यवस्था का पालन मसीह में हमारी ओर परमेश्वर की दिखाई हुई दया के आभार को व्यक्त करने के लिए करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

व्यवस्था जो स्वतंत्रता देती है – याकूब परमेश्वर की व्यवस्था के दो विवरणों को प्रस्तुत करता है जो कि उसकी पत्री के लिए अद्वितीय हैं। पहले स्थान पर, वह इसे ऐसी व्यवस्था पुकारता है जो कि स्वतंत्रता देती है।

याकूब ने 1:25 और 2:12 में इस व्यवस्था के बारे में बोला है जो स्वतंत्रता देती है। वहाँ वह ऐसे कहता है कि व्यवस्था हमें पाप के बन्धन और इसके नाशकारी प्रभावों से स्वतंत्र कर देती है। जब हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कृतज्ञता से करते हैं, तो यह वास्तव में हमें स्वतंत्रता देती है। याकूब इसी दृष्टिकोण को यूहन्ना 8:32 से उदधृत करता है जहाँ वह ऐसा कहता है कि:

तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा (यूहन्ना 8:32)।

रोमियों 7:7-13 में, पौलुस व्यवस्था का विवरण कुछ इस तरह से देता है कि जिसे पाप हम में बुरी इच्छाओं की तीव्रता को उत्पन्न करने के लिए उपयोग करते हुए हमें पाप का दास बनाता है। परन्तु जब याकूब व्यवस्था को ऐसे पुकारता है, कि "व्यवस्था स्वतंत्रता प्रदान" करती है, तो वह विवरण देता है कि कैसे परमेश्वर का आत्मा व्यवस्था को सकारात्मक तरीके से उपयोग करते हुए हमारे लिए व्यवहारिक ज्ञान के लिए आधिकारिक मार्गदर्शक बनता है।

जैसा कि हमने देखा है, कि याकूब के बहुत से पाठक पाप के जाल में फँसे हुए थे जो कलीसिया को नुकसान पहुँचा रहे थे और उन्हें हताशा में छोड़ रहे थे। और, जब वे अपने ज्ञान के विचारों का पालन करते रहेंगे, वे हताशा, परेशानियों और नुकसान जो पाप उनके जीवनों में लेकर आया था, से बचने में सक्षम नहीं थे। परन्तु जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें पहले पाप के अत्याचार और जुर्माने से स्वतंत्र कर दिया था, परमेश्वर का वचन ने साथ ही उनके प्रतिदिन के व्यवहारिक जीवन की गति को भी नियुक्त कर दिया था जो कि उन्हें पाप की निराशा और परेशानियों से स्वंत्रत कर देगा।

व्यवस्था निश्चित ही विश्वासियों के जीवन को मार्गदर्शन करता, दण्ड देता, सुधारता है – ठीक है न? - और उन्हें परमेश्वर की इच्छा के साथ मेल में लाने की कोशिश करता है। और तौभी, अन्त में, यद्यपि, मैं सोचता हूँ कि इसी लिए याकूब इसे आजादी की व्यवस्था, स्वतंत्रता की व्यवस्था कह कर पुकारता है और यह कि हमारा न्याय इस स्वतंत्रता की व्यवस्था के द्वारा किया जाएगा। मेरे कहने का यह अर्थ है कि स्वतंत्र जिस मसीह ने हमें दिया है, और इसलिए, हमें एक दूसरे के लिए जीवन यापन करना और व्यवहार करना है। हमारा न्याय व्यवस्था के द्वारा किया जाएगा जिसमें परमेश्वर किसी तरह का कोई पक्षपात नहीं दिखाएगा और अपने अनुग्रह को स्वतंत्रता के साथ हमें देगा, और इसलिए, हमें भी इसी ही अनुग्रह को देना है और एक दूसरे को, गरीब, धनी, बुजुर्ग, जवान, दास और स्वतंत्र, पुरूष और स्त्री को पक्षपातरहित हो कर देना है, ठीक वैसे ही जैसे सन्त पौलुस वास्तव में कहता है।
- डॉ. जैफरी ऐ. गिब्बस

इस लिए ही याकूब 1:22-25 में जोर देता है कि:

परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं... पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है - वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर नहीं - पर वैसा ही काम करता है (याकूब 1:22-25)।

राजकीय व्यवस्था – परमेश्वर की व्यवस्था के ऊपर बोलने के अतिरिक्त कि यह ऐसी व्यवस्था है जो कि स्वतंत्रता प्रदान करती है, याकूब साथ ही परमेश्वर की व्यवस्था को सकारत्मक रूप से राजकीय व्यवस्था के रूप में भी इंगित करता है।

याकूब व्यवस्था को 2:8 में राजकीय व्यवस्था कह कर पुकारता है। यह शब्दावली हमारे ध्यान को परमेश्वर की आज्ञाओं को इस दृष्टिकोण से देखने की ओर आकर्षित करती है जो कि सम्पूर्ण पुराने और नियम में प्रगट होती है। परमेश्वर की व्यवस्था राजकीय आदेश हैं। यह उसक' राज्य के नागरिकों के ऊपर उसके लोगों के लिए सर्वोच्च शासक की ओर से आए हैं।

अब, आधुनिक संसार में हम अकसर इस राजकीय कल्पना की महत्वपूर्णता की समझ के प्रति कठिनाई को पाते हैं। हम में से बहुत कम सामर्थी राजाओं द्वारा शासित देशों में उनके अधीन रहते हैं। परन्तु याकूब के पाठक रोमी सम्राट के अधिकार के प्रति अधीन थे। वह जानते थे कि इसका क्या अर्थ होता है जब परमेश्वर की व्यवस्था को "राजकीय व्यवस्था" कहा जाता है। सरल रूप में कहना, वह जानते थे कि परमेश्वर की व्यवस्था कुछ ऐसी थी जिसे हल्के रूप में नहीं लेना चाहिए। यह कुछ ऐसी नहीं थी जिसे हमें जब चाहे ले लें और जब चाहे छोड़ दें। यह ब्रह्माण्ड के अलौलिक राजा की ओर से आई हैं। और इसलिए, इसका प्रत्येक हिस्सा हमारे ऊपर सम्पूर्ण अधिकार रखता है।

सुनिए 2:8-10 के हिस्से और उस तरीके को जिसमें परमेश्वर की राजकीय व्यवस्था का वर्णन याकूब करता है:

यदि तू पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार करता है... तो सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो... तो अच्छा करते हो...क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों मे दोषी ठहर चुका है (याकूब 2:8-10)।

याकूब के अधिकांश, यदि सभी नहीं, पाठक यहूदी विश्वास से आए हुए-मसीही समझते थे कि परमेश्वर की व्यवस्था महत्वपूर्ण थी। परन्तु जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, उन्होंने स्वयं को चुनिंदा व्यवस्था के पालन करने के लिए दिया हुआ था। वे इसकी कुछ ही हिस्से का पालन करते थे और अन्य हिस्सों को अन्देखा कर देते थे। इसलिए, याकूब ने उन्हें स्मरण दिलाया कि व्यवस्था ऐसी "राजकीय व्यवस्था है जो कि पवित्रशास्त्र" में पाई जाती है। ईश्वरीय राजा की ओर से आई है। और इसी कारण से, "जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों मे दोषी ठहर चुका है।"

यह प्राचीन मानवीय राजा के लिए अस्वीकार्य था कि उसके नागरिक केवल उसी ही कानून का पालन करें जिसे *वे* अपनी सुविधा या प्रसन्नता के अनुसार पाते थे। और इसी तरीके से, यह मसीह के अनुयायियों के लिए अस्वीकार्य था कि वे केवल परमेश्वर के राज्य की व्यवस्था का पालन करें जो उनकी सुविधा और प्रसन्नता के अनुसार हो। प्राचीन मानवीय राजा इस तरह की चुनिंदा बातों के पालन किए जाने को राजकीय अधिकार के विरोध में विद्रोह कह कर पुकारते हैं। और परमेश्वर इस तरह की चुनिंदा बातों के पालन किए जाने के लिए अपने राजकीय अधिकार के प्रति विद्रोह के रूप में मानता है। परमेश्वर की व्यवस्था व्यवहारिक ज्ञान के लिए मापदण्ड है और यह उन सभी के ऊपर स्वतंत्रता को ले आती है जो गंभीरता से सभी राजकीय विधानों को पालन करते हैं।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे याकूब परमेश्वर की व्यवस्था में पाए जाने वाले व्यवहारिक ज्ञान के मार्गदर्शन के ऊपर बल देता है, हमें उन तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए जिसमें उसने परमेश्वर की व्यवस्था की निश्चित प्राथमिकताओं के ऊपर जोर दिया है।

परमेश्वर की व्यवस्था की प्राथमिकताएँ

आइए इसका सामना करें, जब कभी मसीही विश्वासी परमेश्वर द्वारा हमें दी गई *सभी* आज्ञाओं के पालन के बारे में बोलते हैं, हम एक बहुत ही व्यवहारिक समस्या में चले जाते हैं। स्मरण रखने के लिए

बहुत सी आज्ञाएँ हैं, परन्तु उनमें से आज्ञा पालन करने के लिए बहुत ही कम हैं। इसलिए हमारी सीमितता के कारण, हम केवल एक समय में एक या केवल वही एक के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने के लिए मजबूर हैं। और, इसमें कोई सन्देह नहीं है, तब हम आसानी से परमेश्वर के वचन के अधिकार की परवाह न करने के फंदे में पड़ते हुए पवित्रशास्त्र के केवल उन्हीं ही हिस्सों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जिनका हम पालन करना चाहते हैं, गिर जाते हैं। इस समस्या से बचने के लिए, हमें उन प्राथमिकताओं को पहचान करने की आवश्यकता है जिन्हें व्यवस्था स्वयं हमें देती है। और हमें परमेश्वर की व्यवस्था के महत्वपूर्ण पहलूओं को अवश्य ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

आपको स्मरण होगा कि यीशु ने परमेश्वर की व्यवस्था की प्राथामिकताओं का निष्पादन मत्ती 22:34-40 में किया है। इन वचनों में, वह दो सबसे बड़ी आज्ञाओं की पहचान करता है। वह किसी अनिश्चित शब्दों में घोषणा नहीं करता है, कि परमेश्वर को प्रेम करने की, व्यवस्थाविवरण 6:5 में दी हुई आज्ञा अपने मन में रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। और उसने अपने पड़ोसी से प्रेम करने की पहचान, लैव्यव्यवस्था 19:18 से दूसरे सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त के रूप में की। प्रेरित पौलुस स्पष्ट रूप से समझ गया था कि परमेश्वर को प्रेम करना सबसे बड़ा आदेश था। परन्तु गलातियों 5:14 में, उसने यह भी कहा है कि सम्पूर्ण व्यवस्था अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम रखने में पूरी हो जाती है। यह बहुत ही ज्यादा रूचिपूर्ण है, कि याकूब ने भी ऐसा ही किया है। 2:8-10 के बाकी के बचे हुए हिस्से और याकूब के द्वारा दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा के ऊपर दिए हुए महत्व को सुनिए:

यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार, "कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख," सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा करते हो। पर यदि तुम पक्षपात करते हो, तो पाप करते हो; और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा (2:8-10)।

यहाँ पर ध्यान दें कैसे याकूब राजकीय व्यवस्था की प्राथमिकताओं को लैव्यव्यवस्था 19:18 के शब्दों में सारांशित करता है कि, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

यह कोई रहस्य नहीं है कि याकूब ने ऐसा किया है। कलीसिया के गरीब और धनी विश्वासियों के बीच में अशांति दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा को अन्देखा करने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ था।

जैसा कि यहाँ पर याकूब ध्यान देता है, कि वे जो धनी के पक्ष में "पक्षपात दिखाते" थे "व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था तोड़ने वाले बन कर अपराधी" ठहरे हैं। प्रत्येक जो व्यवस्था की एक बात को पालन करने से चूक जाए वह "[व्यवस्था] की सारी बातों को तोड़ने का दोषी ठहरता है।" इसलिए, परमेश्वर की व्यवस्था, व्यवहारिक ज्ञान के लिए आधिकारिक मार्गदर्शक, हमारे लिए एक दूसरे को प्रेम करने, दूसरा केवल परमेश्वर को ही अपने सम्पूर्ण मन से प्रेम करने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। जैसा कि याकूब ने 1:27 में स्मरण दिलाया है कि:

हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों ओर विधवाओं के क्लेश में उसकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें (1:27)।

इसलिए, सच्ची भक्ति की जाँच क्या है? ठीक है, यह नहीं कि आप ऐसे अच्छे कार्य करें जो कि नैतिक हो, जो आपको समाज में अच्छा दिखाते हो – परमेश्वर अनाथों की देखभाल करता है; परमेश्वर विधवाओं की देखभाल करता है – जब उनकी देखभाल कोई नहीं कर रहा होता, जब आपको

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परिणाम में कुछ भी वापस नहीं मिलता है। एक अनाथ कौन है? एक विधवा कौन है? एक ऐसा व्यक्ति जो कुछ बदले में आपको कुछ भी वापस नहीं देता। इसलिए अपने पड़ोसी या अपने स्वामी के प्रति किया हुआ एक दयालुता का कार्य सच्ची भक्ति का प्रमाण के रूप में गिना नहीं जाता है। परन्तु आप जानते हैं, परमेश्वर गरीबों को प्रेम करता है: परमेश्वर कमजोर से कमजोर की देखभाल करता है और स्वयं के लिए बदल में कुछ भी भौतिक वस्तु को प्राप्त करने की चाह नहीं करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि वह हमारी स्तुति को प्राप्त करता है, और उस भलाई में हर्षित होता है जिसे हम करते हैं। परन्तु उन लोगों की देखभाल करना जो बदले में कुछ नहीं दे सकते हैं, एक बहुत बड़ी जाँच है। - डॉ. डॉन डोरीआनी

याकूब ने धनी विश्वासियों के लिए परमेश्वर की व्यवस्था की प्राथमिकताओं का अनुसरण अपने गरीब पड़ोसियों को प्रेम करने के द्वारा करने की आवश्यकता के ऊपर जोर दिया। परन्तु पड़ोसी के लिए प्रेम व्यवहारिक ज्ञान के लिए बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण था जिसके ऊपर याकूब ने जोर दिया कि कैसे यह गरीब और धनी दोनों तरह के विश्वासी के जीवन के ऊपर भी लागू होता है। अपनी पूरी पत्री में, कुछ उदाहरणों का उल्लेख करने के द्वारा, याकूब ने यह स्पष्ट कर दिया कि अपने पड़ोसी को प्रेम करने के अर्थ अपनी जीभ को आशीष के साधन के रूप में उपयोग करना चाहिए।

1:19 में, याकूब लोगों को एक दूसरे के साथ "सुनने के लिए तत्पर और बोलने के लिए धीर और क्रोध करने में धीमा होने" की बुलाहट देता है। याकूब जोर देता है कि लड़ाईयाँ, झगड़े और दोष लगाना परमेश्वर के लोगों के मध्य में बिल्कुल भी नहीं होनी चाहिए। 4:11 में वह "दोष" को निन्दा करता है। और 5:9 में याकूब आदेश देता है कि, "एक दूसरे पर दोष न लगाओ।" इसकी अपेक्षा, 5:16 के अनुसार, उन्हें "अपने-अपने पापों को एक दूसरे के सामने मान लेना था और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।"

यदि याकूब के पाठकों में विश्वासी यह दिखाना चाहते थे कि उनके पास स्वर्ग से ज्ञान दिया गया है, तो उन्हें स्वयं को परमेश्वर की व्यवस्था के मापदण्ड के प्रति समर्पित करना चाहिए था। और वह ऐसा एक दूसरे के लिए उनके प्रेम के ऊपर परमेश्वर की व्यवस्था की प्राथमिकता को पूरी तरह से पहचानने के द्वारा करेंगे।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे याकूब ने उसके पाठकों की आवश्यकता के लिए व्यवहारिक ज्ञान के महत्व को सम्बोधित किया और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान किया, आइए हम एक तीसरे मुख्य विषय: विश्वास और व्यवहारिक ज्ञान के मध्य सम्बन्ध को देखें जिसका उसने निपटारा किया है।

विश्वास

यदि कोई एक है जो कि मसीहियत के केन्द्र में है, तो वह विश्वास है। हम मसीहियत को "हमारा विश्वास" कह कर पुकारते हैं। हम मसीह को हमारे विश्वास की विषयवस्तु कहते हैं। हम *सोला फिडा* या केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराया जाना के प्रोटौस्टेंट धर्मसिद्धान्त की पुष्टि करते हैं। जिस विश्वास की प्रमुखता को हम आज स्वीकार करते हैं वह स्वयं नए नियम में विश्वास की केन्द्रीयता में निहित है। विश्वास ही प्रथम सदी की मसीहियत के केन्द्र में था। और इसी कारण से, अपने पाठकों को व्यवहारिक ज्ञान की महत्वपूर्णता से प्रभावित करने के लिए, याकूब ने विश्वास के विषय का निपटारा किया है।

समय हमें केवल इतनी ही अनुमति देगा कि हम उन दो तरीकों का उल्लेख करें जिसमें याकूब ने व्यवहारिक ज्ञान और विश्वास को आपस में सम्बद्ध किया है। सर्वप्रथम, याकूब ने विश्वास और कर्मों में सम्बन्ध की व्याख्या की है; और दूसरा याकूब ने विश्वास और धर्मी ठहराए जाने के सम्बन्ध की व्याख्या की है। आइए सबसे पहले यह देखें कि वह विश्वास और कर्मों के साथ कैसे व्यवहार करता है।

विश्वास और कर्म

याकूब अपने विचार विमर्श को 2:14 में एक सरल से प्रश्न के साथ करता है:

हे मेरे भाइयों, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? (2:14)।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि इसका उत्तर याकूब "नहीं" में देता है। ऐसा विश्वास जो कर्मों के साथ नहीं होता बचा नहीं सकता है।

"विश्वास" या "आस्था" यूनानी संज्ञा *पिस्टिस* (πίστις) से और क्रिया *पिस्टियो* (πιστεύω) से अनुवाद किया गया है। इस परिवार के शब्द हजारों बार नए नियम में प्रगट होते हैं। परन्तु हिन्दी की तरह ही "विश्वास" और "आस्था" रखना, ये शब्द कई विभिन्न अवधारणाओं की ओर संकेत देते हैं।

कुछ एक का उल्लेख यहाँ करने पर, कई बार नए नियम में, विश्वास और आस्था रखना केवल बौद्धिक सहमति की ओर संकेत देता है कि कोई बात सत्य है। अन्य समयों पर, वे एक अस्थाई समर्थन की ओर संकेत देते हैं। और भी अन्य समयों पर, वे उस ओर संकेत करते हैं जिसे धर्मवैज्ञानिक अकसर "बचाने वाला विश्वास" कह कर पुकारते हैं। बचाने वाला विश्वास, मसीह ही उद्धार का एक मार्ग के ऊपर सम्पूर्ण मन से, जीवन-पर्यन्त भरोसा और निर्भरता है। याकूब यह स्वीकार करता है कि "विश्वास" और "आस्था" के कई अर्थ हो सकते हैं। और इसी कारण से, वह अपने पाठकोंं को जिस तरह का विश्वास उनके पास उसकी जाँच करने की बुलाहट देता है। उदाहरण के लिए, 2:19 में, याकूब उसके यहूदी-विश्वास में आए हुए मसीही पाठकों को इन निम्न शब्दों के साथ चुनौती देता है:

तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है! दुष्टात्मा भी विश्वास रखते - और थरथराते हैं (याकूब 2:19)।

जब याकूब ने यह स्वीकार किया कि उसके पाठक विश्वास करते थे – क्रिया शब्द *पिस्टियो* (πιστεύω) से – कि एक ही परमेश्वर है, तो उसने यह संकेत दिया जिसे *शेमा* कह कर पुकारा जाता है।

यह व्यवस्था विवरण 6:4 में, पुराने नियम का प्राचीन विश्वास का अंगीकार, हमें यह बताता है कि, "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।" याकूब के दृष्टिकोण से, यह अच्छा था कि उसके पाठकों के पास इस सच्चाई के लिए बौद्धिक सहमति थी। परन्तु यह जितना भी अच्छा था, इस तरह की आस्था या भरोसा पर्याप्त नहीं थी क्योंकि "यहाँ तक कि दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती हैं।" सच्चाई तो यह है, कि दुष्टात्माएँ डर से कांपती हैं जब वे आपके बारे में सोचती हैं। परन्तु यह उनके लिए लाभ की कोई बात नहीं करता। आज्ञाकारिता के बिना केवल बौद्धिक सहमित होना बचाने वाला विश्वास नहीं है। या जैसे याकूब संक्षेप में 2:26 में व्यक्त करता है कि:

अत:, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है (याकूब 2:26)।

विश्वास और कर्मों की मूल धारणा को अपने ध्यान में रखते हुए, हमें अब याकूब के द्वारा विश्वास और धर्मी ठहराए जाने के लिए किए हुए निष्पादन का उल्लेख करना चाहिए।

विश्वास और धर्मी ठहराया जाना

यह प्रश्न कि परमेश्वर का सामने कौन धर्मीकृत किया गया या धर्मी ठहराया गया है, याकूब के समय में कुछ यहूदी शिक्षकों के सामने कुछ विवाद का विषय रहा है। और यह पहली सदी की आरम्भिक कलीसिया में भी केन्द्रीय विषय के रूप में रहा है। किसे धर्मी ठहराया हुआ माना जाता था? किसे धर्मी ठहराया हुआ गिना जाता था? 2:21-24 में, याकूब ने इस प्रश्न का उत्तर कुछ इस तरह से दिया है:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जब हमारे पिता अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों से धार्मिक न ठहरा था...इस प्रकार तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, बरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है (याकूब 2:21-24 हि. पु. अनु.)।

यहाँ पर याकूब ने धर्मी ठहराए जाने के विषय में, यूनानी क्रिया *डिकायो* (δικαιόω) का उपयोग करते हुए बोला है, जिसका अर्थ "धर्मी ठहराए जाने की घोषणा करना", "धर्मीकृत किए जाने" या "उँचे पर उठाए जाने" से है। उसने यह तर्क दिया कि अब्राहम अपने कर्मों के कारण, उत्पत्ति 22 में परमेश्वर के सामने अपने पुत्र इसहाक को बलिदान में चढ़ाने के कारण धर्मी ठहराया गया या उँचे पर उठाया गया। और इसी आधार पर, उसने यह सार निकाला कि कोई भी केवल विश्वास के द्वारा धर्मी नहीं ठहराया जाता या उँचे पर नहीं चढ़ाया जाता है। प्रत्येक जिसे परमेश्वर स्वीकार करता है वह कर्मों के कारण धर्मी ठहराए जाने के द्वारा करता है।

याकूब का कथन ने अभी तक की सदियों में सभी तरह के विवादों को मूल रूप से जन्म दे दिया क्योंकि यह प्रेरित पौलुस द्वारा धर्मीकृत किए जाने के विषय में ही हुई शिक्षा के विरोध में था। 2:24 में याकूब ने कहा कि:

इस प्रकार तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है (याकूब 2:24)।

इसके विपरीत, प्रेरित पौलुस ने गलातियों 2:16 में लिखा था कि:

हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें, इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा (गलातियों 2:16)।

वास्तविकता में, यहाँ पर कोई विरोधाभास नहीं है। इसकी अपेक्षा, याकूब और पौलुस ने एक ही शब्द *डिकायो* (δικαιόω) या "धर्मी ठहराए जाने" का उपयोग दो भिन्न तरीकों से किया है। पौलुस की तकनीकी धर्मवैज्ञानिक शब्दावली में, उसने अकसर इस शब्द को केवल एक ही बात "धर्मी ठहराए जाने" के लिए ही सुरक्षित रखा। पौलुस के लिए, "धर्मी ठहराया जाने" का संकेत उन सभी के लिए धार्मिकता की आरम्भिक घोषणा है जिन्होंने यीशु में बचाने वाले विश्वास को मसीह की धार्मिकता को अपने में रोपित करने के द्वारा प्राप्त किया है।

परन्तु, याकूब ने विभिन्न तरीके से धर्मी ठहराए जाने के विषय में बोला है। याकूब ने शब्द *डिकायो* (δικαιόω) का उपयोग "सही प्रमाणित होता कुछ" या "उँचे पर उठाये जाने" के रूप में किया है। वह यह अस्वीकार नहीं करता है कि यहाँ पर मसीह की धार्मिकता में आरम्भिक रोपित किया जाना जब एक व्यक्ति सबसे पहले बचाने वाले विश्वास को उपयोग करता है। परन्तु, याकूब के लिए, शब्द *डिकायो* उस व्यक्ति के ऊपर लागू होता है जिसने अपने विश्वास को प्रभु यीशु में "सही प्रमाणित होता हुआ कुछ" के रूप में किया है या वह अपने जीवन में आत्मा के कार्य के द्वारा "उँचे पर उठाया" गया है। याकूब के दृष्टिकोण से, आत्मा के द्वारा सामर्थी बनाया जाने पर मसीह की विश्वासयोग्यता भक्ति की ओर ले चलती है। यह बात कोई अर्थ नहीं रखती कि एक व्यक्ति कुछ भी दावा क्यों न करता रहे, यदि वे अपने विश्वास को भले कार्यों के द्वारा प्रदर्शित नहीं करते हैं, तब अन्त में उन्हें उँचे पर नहीं उठाया जाएगा। इस तरह से, याकूब ने विश्वास और धर्मी ठहराए जाने के इस सम्बन्ध को एक ऐसे तरीके में बोला है जो कि उसके पाठकों के व्यवहारिक ज्ञान की महत्वपूर्णता के मुख्य अंशों को प्रगट करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मैं सोचता हूँ, कि याकूब की पत्री की पुस्तक में केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के विषय का आभासित संघर्ष वास्तव में एक मुख्य विषय है। यह सामने आ जाता है... कदाचित् इस विशेष विषय के लिए किसी भी पुस्तक से ज्यादा स्याही को लिख कर उंडेल दिया गया है। सब में सर्वप्रथम मैं यह कहना चाहता हूँ कि यूनानी शब्द *डिकायो* का कई बार अर्थ "धर्मी ठहराए जाने का कार्य" होता है, जिसे, यदि मुझे सरल से सरलत्तम बनाना होता तो वह यह है कि धर्मी ठहराया जाना मूल रूप से एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आपके पास, एक तरफ तो, क्षमा है – परमेश्वर आपको क्षमा करता है। यह कम मूल्य का पहलू है। दूसरी तरफ आपके पास अतिरिक्त एक बात है, जो कि धार्मिकता का आपमें रोपण किया जाना है। और फिर वहाँ पर आपके लिए वह घोषणा है कि "तू मेरी दृष्टि में धर्मी ठहरा है।" और इस तरह से, विश्वास के द्वारा हम धर्मी ठहराए जाते हैं, और तब यहाँ पर यह शब्द धर्मी ठहराए जाने का उपयोग आता है। दूसरे तरफ, हम धर्मी ठहराए जाने के अर्थ के लिए "ऊँचे पर उठाया जाने" या शिरोमणि ठहराना या "धर्मी के रूप में दिखाना" को उपयोग कर सकते हैं। पौलुस न्यायिक तरीके का उपयोग कर रहा है, और तब हमारे पास याकूब है जो इसके उपयोग कार्यों के उदाहरण को देने के लिए कर रहा है, जो धर्मी होने को दिखलाता है, इस तरह से...दूसरे शब्दों में, यदि हमें इसे सारांशित करना हो, तो यह पौलुस द्वारा उपयोग किया गया धर्मी ठहराया जाना विश्वास की प्राथमिकता होगा, और याकूब के देखने के तरीके में धर्मी ठहराया जाना मन परिवर्तन का पश्चात् का जीवन या विश्वास का प्रमाण होगा...इस लिए, याकूब का प्रश्न है कि "किसे धर्मी ठहरा हुआ समझना चाहिए? वह जो यह कहता है कि वह परमेश्वर में विश्वास करता है या वह जो ऐसे जीवन का यापन करता है जो उसके अंगीकार के ऊपर आधारित है और उसका परमेश्वर में विश्वास है?" और याकूब और पौलुस के लिए, विश्वास अवश्य कार्य करता हुआ होना चाहिए। क्या मैं इसे फिर से बोल सकता हूँ? विश्वास अवश्य कार्य करता हुआ होना चाहिए। इसे अवश्य दिखाई देना चाहिए। मौखिक विश्वास पर्याप्त नहीं है। मानसिक विश्वास अपर्याप्त है। विश्वास कार्य में चलता हुआ दिखाई देना चाहिए। यह किसी तरह की कोई पक्षपात को अपने में नहीं रखता है, यह जीभ को नियंत्रण में रखता है, यह बुद्धिमानी से कार्य करता है, यह शैतान की सामर्थ्य विरोध करने की सामर्थ्य प्रदान करता है, और यहाँ पर, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है, कि यह प्रभु के आगमन की धैर्य के साथ प्रतीक्षा करता है। और दोनों अर्थात् याकूब और पौलुस ने अक्षरश: एक ही बात की शिक्षा दी। - डॉ. लेरी जे. वाटर्स

उस तरीके को सुनिए जिसमें याकूब इस सिद्धान्त को 2:15-17 में लागू करता है:

यदि कोई भाई या बहिन नगें-उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। और तुम में से कोई उन से कहे, "कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो;" पर जो वस्तुएँ देह के लिये आवश्यक हैं वह उन्हें न दे तो क्या लाभ? वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है (याकूब 2:15-17)।

यह कल्पना करना कठिन होगा कि याकूब अपनी बात को इससे भी ज्यादा और अधिक जोर से कर रहा है। उसके पाठकों को उनकी कलीसियाओं में फैली हुई अशांति को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति व्यवहारिक आज्ञाकारिता, विशेषकर एक दूसरे को प्रेम करने के आदेश के द्वारा सम्बोधित करने की आवश्यकता थी। यह बात कोई अर्थ नहीं रखते कि उन्होंने अपने विश्वास के लिए चाहे कोई भी दावा क्यों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

न किया हो, उन्हें ऊँचे पर धर्मी ठहराए जाने के रूप में परमेश्वर की दृष्टि में बिना किसी प्रेम के व्यवहारिक भले कार्यों के नहीं उठाया जा सकता है।

सारांश

इस अध्याय में हमने याकूब की पत्री की पुस्तक में ज्ञान के दो मार्गों को देखा है हमने देखा कि याकूब अपने पाठकों को ओर चिन्तनशील ज्ञान का संकेत उनके पास चिन्तनशील ज्ञान के होने की आवश्यकता को करने के द्वारा करते हुए, उन्हें मार्गदर्शन का प्रस्ताव देता और चिन्तनशील ज्ञान और विश्वास में सम्पर्क को स्थापित करता है। और हमने यह भी देखा कि कैसे याकूब अपने पाठकों को व्यवहारिक ज्ञान का पीछा करने के लिए उन्हें इसकी आवश्यकता को दिखाने के द्वारा और विश्वासयोग्यता में परमेश्वर के सत्य लागू करने, परमेश्वर और उसके लोगों में नम्रता भरी सेवकाई को करने के द्वारा निर्देश देता है।

याकूब ने पहली सदी के यहूदी विश्वास में आए मसीहियों को ज्ञान के दो मार्गों का अनुसरण करने लिए बुलाहट दी है। और यही कुछ आज मेरे और आपके लिए सत्य है। हमें भी दोनों तरह अर्थात् चिन्तनशील और व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता है। इन वरदानों को परमेश्वर से पाने के लिए, हमें स्वयं को याकूब के द्वारा प्रस्तावित मार्गदर्शन के अधीन दे देना होगा। और हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम ऐसा परमेश्वर के प्रति विश्वास और भक्ति में करते हैं। ऐसे समय में जब हम आसानी से सांसारिक ज्ञान का अनुसरण करते हैं, हमें याकूब की पुस्तक को अपने मन में ले लेना चाहिए और ज्ञान के उन मार्गों का अनुसरण करना चाहिए जो परमेश्वर से आता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम